International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 11-12-2020; Accepted: 26-12-2020; Published: 22-01-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 27-29

अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में प्रषिक्षणरत बी0एड0 प्रषिक्षणार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

वर्षा रानी[1], राधा दुआ[2], शिखा अग्रवाल[3]

[1] एम0एड0, छात्रा, शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[3] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

मानव जीवन में संवेगों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है तथा व्यक्ति के व्यवहार का सम्बन्ध संवेगों से होता है और शिक्षाका सम्बन्ध व्यवहार का परिशोधन करने से होता है इसलिए बालकों के संवेगात्मक व्यवहार का अध्ययन करना शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी होता है। प्रस्तुत शोध कार्य का विषय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषत महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन। इसमें वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया तथा अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत 4 महाविद्यालयों तथा 100 प्रशिक्षणार्थियों को चयन विधि द्वारा चयन किया गया है। इस शोध पत्र में प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए डा0एस0के0 मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत संवेगात्मक मापनी का प्रयोग कया गया। इसमें प्रयुक्त सांख्यिकी विधि के रूप में मध्यमान मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस शोध का निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है इसका कारण महाविद्यालयों की शैक्षिक प्रणाली एवं समान संवेगात्मक वातावरण समान है।

कूट शब्दः स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों, प्रषिक्षणरत बी0एड0 प्रषिक्षणार्थियों में संवेगात्मक, बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के विकास का मूल साधन है जिसके द्वारा बालक की जन्म जात शक्तियों का विकास कर उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते है। शिक्षा के साथ मानव जीवन में भी संवेगो का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है शिक्षाके द्वारा हम अपने संवेगो पर नियन्त्रण करना सीख जाते है संवेगो के उत्पन्न होने पर व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक स्थिति में परिवर्तन आ जाता है। मैकडूगल ने कुछ चौदह संवेगो का उल्लेख किया है। जिसका सम्बन्ध व्यक्ति के व्यवहार से होता है। अध्यापकगण तथा अभिभावकगण उचित सावधानी बरतकर बालक–बलिकाओं के संवेगात्मक विकास को सही दिशा प्रदान कर सकते है।

संवेगात्मक बुद्धि दो शब्दों संवेग तथा बुद्धि से मिलकर बना है। संवेग तथा बुद्धि एक दूसरे के सहयोगी तथा परस्पर समान्तर क्षमतायें है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को उसकी अद्वितीय क्षमताओं तथा उद्देश्यों का अनुसरण करने की प्रेरणा प्रदान करती है।

डेनियन गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि योग्यताओं व कौशलों का एक ऐसा व्यापक सामुच्य कहा है जो नेतृत्व निष्पादन को बढ़ाता है।

संवेगात्मक बुद्धि के विकास में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। एक प्रभावशाली शिक्षक वह है जो किसी भी परिस्थिति में अपने संवेगो पर भली भाँति नियंत्रण रखना जानता हो। आज के परिवेश में संवेग नियन्त्रण ही सफलता का मूलमन्त्र है अतः प्रस्तुत अध्ययन में भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है जो वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिक व महत्वपूर्ण विषय है।

महाराज व मोनिका (2011) के द्वारा शैक्षिक उपलब्धि संवेगात्मक बुद्धि तथा आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसमें 140 लड़के तथा लड़कियों के न्यादर्श लिया गया है और पाया गया कि उनकी संवेगात्मक बुद्धि और आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः अध्ययन में इनकी बुद्धि के मध्य सकारात्मक तथा सार्थक सहसम्बन्ध है।

सिंह अमित तथा कुमार दिनेश (2011) ने कालेज विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि को जानने के लिए अध्ययन किया गया जिसमें 50 लड़के तथा 50 लड़कियों का न्यादर्श लिया गया अध्ययन में पाया गया कि कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में समानता भी जबकि विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि समानता नहीं पाई गई और यह शोध यह बताता है कि संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध है।

अध्ययन के उद्देष्य

- अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
- अनुदानित महाविद्यालयों में बी0एड0 में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
- स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में बी0एड0 में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

- अनुदाानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणर्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नही है।
- अनुदानित महाविद्यालयों में बी0एड0 में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में बी0एड0 में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान क्रियाविधिः इस शोध में बी0एड0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणर्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर के अध्ययन हेतु "वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि " का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्याः प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के अन्तरगत एम0जे0पी0 रू0वि0 विद्यालय बरेली से सम्बद्ध समस्त ऐसे महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षु सम्मिलित है जिनमें न्ळब से मान्यता प्राप्त बी0एड0 पाठयक्रम संचालित है।

न्यादर्षः प्रस्तुत शोध में बरेली जनपद के चार महाविद्यालयों के कुल 100 प्रशिक्षणर्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया तथा चयनित महाविद्यालयों में से 50 अनुदानित तथा 50 स्वक्तिपोषित प्रशिक्षणर्थियों को प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से चुना गया।

प्रयुक्त उपकरणः प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा डा0 एस0के0 मंगल तथा शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत " संवेगात्मक बुद्धि मापनी" का प्रयोग किया गया है। प्रयुक्त शोध उपकरण की विश्वसनीयता गुणांक .89 तथा वैधता गुणांक –0.662 है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँः प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग सांख्यिकी प्रविधियों के रूप में किया गया।

विष्लेषण और व्याख्या

परि0 1. अनुदानित एवं स्ववितपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणर्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

महाविद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
टनुदानित महाविद्यालय	50	64.68	12.24	1.07	0.5 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
स्वतिन्तपोषित महाविद्यालय	50	67.10	12.60		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुदानित एवं स्वविन्तपोषित महाविद्यालय के प्रशिक्षणर्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 64.68 तथा 67.10 तथा उनके मानक विचलन का मान क्रमशः 12.24 तथा 12.60 है तथा टी मान 1.07 प्राप्त हुआ है जोकि 0. 05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है अर्थात् 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के प्रशिक्षणर्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है इसका कारण यह हो सकता है कि अनुदानित एवं स्ववितपोषित महाविद्यालय के प्रशिक्षणर्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की गुणवत्ता समान है। अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय का संवेगात्मक वातावरण प्रशिक्षणर्थियों के अनुरूप है।

परिकल्पना–2. अनुदानित महाविद्यालयों में बी0एड0 पाठयक्रम में अध्ययनरत् छात्र–छात्रओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है–

तालिका 2

महाविद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
छात्र	25	66.32	11.92	0.97	0.5 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
छात्राऐं	25	63.04	11.80		

उपरोक्त तालिका में अनुदानित महाविद्यालय के छात्र छात्रओं के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 66.32 तथा 63.04 तथा उनके मानक विचलन का मान क्रमशः 11.92 तथा 11.80 है तथा टी का मान 0.97 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1. 96 से कम है अर्थात् 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अतः कहा जा सकता है कि अनुदानित महाविद्यालयों में बी0एड0 पाठयक्रम में अध्ययनरत् छात्र– छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि अनुदानित महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की गुणवत्ता समान है क्योंकि सभी प्रशिक्षणार्थी बी0एड0 की राज्यस्तरीय प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त ही इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेते है।

परिकल्पना–3. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में बी0एड0 में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है–

तालिका–3

महाविद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
छात्र	25	68.12	16	0.57	0.5 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
छात्राऐं	25	66.08	7.62		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 68.12 तथा 66.08 तथा उनके मानक विचलन क्रमशः 16 तथा 7.62 है तथा ही मान 0.57 प्राप्त हुआ है कि 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है अर्थात् 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है इसका यह कारण हो सकता है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के छात्र–छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की गुणवत्ता इसलिए समान है क्योंकि छात्र–छात्राओं का संवेगात्मक वातावरण, समान आयु एवं समान शैक्षिक योग्यता समान है।

निष्कर्षः– प्रस्तुत शोध की प्रथम शून्य परिकल्पना के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अनुदानित एवं स्वावित्तपोषित महाविद्यालयों के प्रशिक्षणर्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि अनुदानित महाविद्यालय तथा स्वावित्तपोषित महाविद्यालयों की शैक्षिक योग्यता आयु एवं संवेगात्मक वातावरण समान रूप से पाया जाता है इसलिए विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नही पाया गया। द्वितीय तथा तृतीय शून्य परिकल्पना के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि स्वावित्तपोषित तथा

अनुदानित दोनों के छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नही पाया गया इसका कारण यह हो सकता है कि उनकी समान आयु, शैक्षिक योग्यता है। दोनों ही प्रकार के महाविद्यालयों के शिक्षक छात्र–छात्राओं के उच्चतम विकास हेतु सकारात्मक विकास का प्रयास करते है जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

संदर्भ सूची

1. भटनागर ए0बी0 (1997), शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्याकंन, मेरठ, सूर्या पुस्तक भवन
2. मोरिसन एस0एम (1950), संवेगात्मक परिपक्वता मापन मनोवैज्ञानिक अध्ययन
3. शर्मा आर0ए0 (2008), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ
4. कपिल एच0के0 (2007), अनुसंधान विधियां सांख्यिकी के मूलतत्व, आगरा भार्गव पुस्तक भण्डार
5. सिंह रामपाल (2004), सांख्यिकी मूल्याकंन, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर
6. लाल रमन बिहारी एवं जोशी (2006), शैक्षिक मापन, मूल्याकंन एवं सांख्यिकी, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ।